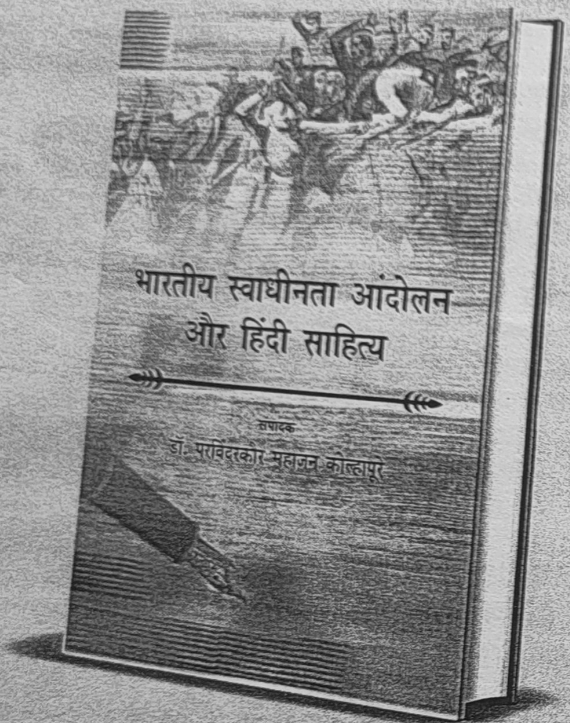

A. R. PUBLISHING CO.
Publishers & Distributors
K-37, Ajit Vihar, Delhi-110084,
Mob. 9968084132, 7982062594
E-mail: arpublishingco11@gmail.com

ISBN 978-93-94165-22-9
9 789394 165229

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

संपादक
डॉ. परविंदरकौर महाजन कोल्हापूरे

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

संपादक

डॉ. परविंदरकौर महाजन कोल्हापूरे

Scanned with ACE Scanner

13. हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय काव्यधारा 79
–डॉ. प्रीती यादव
14. स्वाधीनता आंदोलन और राष्ट्रीय काव्यधारा 84
–डॉ. बन्सीलाल हेमलाल गाडीलोहार
15. स्वाधीनता आंदोलन और मैथिलीशरण गुप्त का काव्य 92
–डॉ. रजिया शहेनाज शेख अब्दुल्ला
16. हिंदी लेखिकाएँ एवं स्वाधीनता आन्दोलन 98
–डॉ. वर्षा मोरे-पावडे
17. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य 103
–डॉ. संध्या लालसिंह ठाकुर
18. स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी उपन्यास 108
–डॉ. सुजितसिंह परिहार
19. स्वाधीनता आंदोलन और छायावादी कविता 114
–डॉ. ज्योति संभाजीराव मुंगल
20. स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता 122
–डॉ. रत्नमाला धारबा धुले
21. राम नरेश त्रिपाठी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना 127
–दयाशंकर यादव
22. स्वाधीनता आंदोलन और दिनकर का काव्य 131
–प्रॉ. डॉ. सुभाष क्षीरसागर
23. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी 137
–प्रा. विजय सिंह ठाकुर राजीव
24. 'मिठो पाणी खारो पाणी' उपन्यास में स्वाधीनता आंदोलन 143
–प्रा. कोल्हे मंजुषा संदिपानराव
25. स्वाधीनता आंदोलन और जयशंकर प्रसाद का काव्य 148
–प्रा. डॉ. भगवान रामकिशन कदम
26. स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी भाषा 152
–प्रा. डॉ. सय्यद उस्मान अमीरसाब
27. निराला के काव्य में राष्ट्रीयता 157
–प्रा. डॉ.पी.एम.भूमरे
28. स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि 164
–प्रा.डॉ. दीपाली आश्रोबा अवचार
29. जनमेजय का नागयज्ञ-पौराणिकता से राष्ट्रीय जागरण 170
–प्रा.डॉ. मनोहर गंगाधरराव चपळे
30. प्रथम तार सप्तक काव्य में राष्ट्रीय चेतना 176
–प्रा. सुधाकर च. वाघमारे
31. स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी भाषा साहित्य 182
–प्रो. डॉ. पाईकराव एस. एस. / प्रा. वाघमारे मनिषा पंढरी
32. भारतीय स्वाधीनता संग्राम एवं हिंदी साहित्य 187
–प्रो. डॉ. लक्ष्मण तु. काळे
33. स्वाधीनता आंदोलन और दिनकर का काव्य 193
–येळणे देविदास गणेशराव
34. स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष 198
–डॉ. खाजी एम. के.
35. स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी भाषा 203
–प्रा. चालिकवार स्मिता कल्याणराव
36. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कवियों की सक्रिय भूमिका 207
–डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
37. मोहनदास नैमिशराय कृत 'वीरांगना झलकारी बाई' उपन्यास और 1857 का स्वाधीनता संग्राम–*प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र* 210
38. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी भाषा 216
–डॉ. निता अरविंद पतंगे
39. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी की भूमिका 219
–प्रा. डॉ. बाबूगिरी महंतगिरी गिरी
40. जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' की स्वाधीनता आंदोलन में भूमिका 224
–डॉ. सुनील जाधव
41. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य 228
–गोस्वामी श्रीकांत विलासगिर

Scanned with ACE Scanner

36. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कवियों की सक्रिय भूमिका

डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख,
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, जिला नांदेड

15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। यह हमारे राष्ट्रीय जीवन में हर्ष और उल्लास का दिन तो है ही इसके साथ ही स्वतंत्रता की खातिर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों का पुण्य दिवस भी है। देश की स्वतंत्रता के लिए 1857 से लेकर 1947 तक क्रांतिकारियों व आन्दोलनकारियों के साथ ही लेखकों, कवियों और पत्रकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी गौरव गाथा हमें प्रेरणा देती है कि हम स्वतंत्रता के मूल्य को बनाये रखने के लिए कृत संकल्पित रहें।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्ता ने ''भारत-भारती'' में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आव्हान किया :

''जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है ॥''

देश पर मर मिटने वाले वीर शहीदों के कटे सिरों के बीच अपना सिर मिलाने की तीव्र चाहत लिए सोहन लाल द्विवेदी ने कहा :

''हो जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।''

वहीं आगे उन्होंने ''पुष्प की अभिलाषा'' में देश पर मर मिटने वाले सैनिकों के मार्ग में बिछ जाने की अदम्य इच्छा व्यक्त की :

''मुझे तोड़ लेना बनमाली! उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक।।''

सुभद्रा कुमारी चौहान की ''झांसी की रानी'' कविता को कौन भूल सकता है, जिसने अंग्रेजों की चूलें हिला कर रख दी। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है :

Scanned with ACE Scanner

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहिचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी की रानी थी।"

"पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं" का मर्म स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे वीर सैनिक ही नहीं वफादार प्राणी भी जान गये तभी तो पं. श्याम नारायण पाण्डेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए "हल्दी घाटी" में लिखा :

"रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था,
राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था,
गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था,
वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।"

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसार ने "अरुण यह मधुमय देश हमारा" सुमित्रानंदर पंत ने "ज्योति भूमि, जय भारत देश ॥" निराला ने "भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे ॥" कामता प्रसाद गुप्त ने "प्राण क्या हैं देश के लिए के लिए। देश खोकर जो जिए तो क्या जिए ॥" इकबाल ने "सारे जहाँ से अच्छा हिस्तोस्ताँ हमारा" तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में :

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये
एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर को जाये
नाश! नाश! हाँ महानाश!!! की
प्रलयंकारी आंख खुल जाये।"

श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर' राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्र के प्रति अपनी काव्यगत मीका देशभक्ति से ओतप्रोत होकर अभिव्यक्त की। आज हमारा राष्ट्रीय गीत है, जिसकी श्रद्धा, भक्ति व स्वाभिमान की प्रेरणा से लाखों युवक हंसते-हंसते देश की खातिर फांसी के फंदे पर झूल गये। वहीं हमारे राष्ट्रगान "जनगण मन अधिनायक" के रचयिता रवीन्द्र नाथ ठाकुर का

योगदान अद्वितीय व अविस्मरणीय है। अस्तु, स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर बाबू गुलाबराय का कथन समीचीन है, 15 अगस्त का शुभ दिन भारत के राजनीतिक इतिहास में सबसे अधिक महत्व है। आज ही हमारी सघन कलुष-कालिमामयी दासता की लौह श्रृंखला टूटी थीं। आज ही स्वतंत्रता के नवोज्ज्वल प्रभात के दर्शन हुए थे। आज ही दिल्ली के लाल किले पर पहली बार यूनियन जैक के स्थान पर सत्य और अहिंसा का प्रतीक तिरंगा झंडा स्वतंत्रता की हवा के झोंकों से लहराया था। आज ही हमारी नेताओं के चिरसंचित स्वप्न चरितार्थ हुए थे। आज ही युगों के पश्चात् शंख-ध्वनि के साथ जयघोष और पूर्ण स्ततंत्रता का उद्घोष हुआ था। "ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी" गीत को याद करते हुए सभी देशवासियों को स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल देशभक्तों के बलिदान और त्याग तथा शौर्य का हमें सदैव स्मरण करते हुए उनके प्रेरणा से आगे बढ़ते रहेना होगा।

संदर्भ

1. उ. प्र. हिन्दी संस्थान एवं संस्कृति विभाग 'भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिंदी कवियों का योगदान'
2. मैथिलीशरण गुप्त 'भारत भारती'
3. माखनलाल चतुर्वेदी 'हिम तरंगिनी'
4. श्रीधर पाठक 'भारत गीत'
5. जयशंकर प्रसाद 'महाराणा का महत्व'
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सुमन'
7. सुभद्रा कुमारी चौहान 'मुकुल'

Scanned with ACE Scanner